Dr. Archana Bharti, Guest Faculty
MJMC/SEM 1/Paper 101
Date- 30/04/2021

NORMATIVE THEORIES (Cont...)
जनसंचार के नियामक सिद्धांत

4. साम्यवादी मीडिया सिद्धांत (Communist Media Theory)

यह सिद्धांत प्रसिद्ध साम्यवादी विचारक **कार्ल मार्क्स स्टालिन** और **लेनिन** के विचारों पर आधारित है। इस सिद्धांत के अनुसार, ''मीडिया विचारों का मानसिक उत्पादन है अतः इसका नियंत्रण मजदूरों के द्वारा किया जाना चाहिए।'' यह सिद्धांत वर्ग विहीन समाज की परिकल्पना पर आधारित है। इसके लिए मीडिया का यह कार्य माना गया कि वह ऐसी कोई बात न कहे जो वर्ग–भेद उत्पन्न करें और समाज में एक वर्ग विशेष को बढ़ावा दे।

सोवियत संघ के अन्य देशों में भी साम्यवादी क्रांतियां हुई और ऐसे विचार दिए गए। साम्यवादी व्यवस्था में मीडिया सत्ता को चुनौती नहीं दे सकता। चूंकि सरकार पर साम्यवादी अर्थात कम्युनिस्ट पार्टी का पूर्ण नियंत्रण होता है इसलिए पार्टी और सरकार जिस दिशा में विकास चाहती है उसी दिशा में मीडिया को भी सहयोगी भूमिका के रूप में काम करना पड़ता है। इस व्यवस्था के अंतर्गत उत्पादन के समस्त साधनों पर मेहनतकश जनता का मुख्य रूप से कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार का नियंत्रण होता है इसलिए सरकार के तमाम माध्यम सरकार के अधीन होते हैं। मीडिया का काम सरकारी नीतियों, विचारों एवं कार्यक्रमों का प्रचार–प्रसार करना माना जाता है और लोगों में कम्युनिस्ट विचारधारा को स्थापित करना होता है।

चूंकि यह सिद्धांत प्रभावी रूप से सोवियत संघ में लागू हुआ था इसलिए इसे सोवियत माध्यम सिद्धांत भी कहा जाता है। साम्यवादी मीडिया व्यवस्था को प्रभुत्ववादी व्यवस्था का ही एक अलग रूप माना जाता है। इस सिद्धांत को सोवियत संघ, चीन, कंबोडिया, वियतनाम, मंगोलिया आदि देशों में लागू किया गया। वर्ष 1917 में वोल्शेविक क्रांति के बाद लेनिन ने प्रेस के संबंध में कुछ सिद्धांत बनाए जो इस प्रकार है–

- प्रेस को समाज पर प्रभुत्ववाले वर्ग की सेवा करना चाहिए।
- समाचारपत्र प्रकाशन का आर्थिक आधार सत्ता के द्वारा नियंत्रित होना चाहिए।
- प्रेस को राजनीतिक संगठन का सहायक होना चाहिए।
- पत्रकारों को राजनीतिक कार्यकर्ता होना चाहिए।

संचार विशेषज्ञों ने साम्यवादी मीडिया सिद्धांत की निम्नलिखित विशेषताओं को बताया है–

- प्रेस को सामाजिक जीवन तथा व्यक्ति के प्रत्येक कार्य का मूल्यांकन मार्क्सवादी दृष्टि से करना चाहिए।
- मास मीडिया पार्टी एवं सत्ता का एक हथियार है और इसे सरकार के एक सहयोगी की भूमिका निभाना चाहिए।
- मास मीडिया को सत्ता तथा पार्टी संगठन के विभिन्न उपकरण के साथ जुड़ा होना चाहिए।
- मास मीडिया के सत्ता और पार्टी की एकता का प्रचार करना चाहिए।
- मास मीडिया सम्पूर्ण संचार व्यवस्था का एक अंग है और इसके जरिए सरकार सकारात्मक सामाजिक विकास करती है।

प्रभुत्ववादी और साम्यवादी संचार व्यवस्था में अंतर
(Difference between Authoritarian and Communist Media System)

साम्यवादी मीडिया व्यवस्था प्रभुत्ववादी मीडिया व्यवस्था का ही एक अगली कड़ी है फिर भी इन दोनों में कुछ अंतर है जो निम्नलिखित है–

- प्रभुत्ववादी व्यवस्था में मीडिया निजी स्वामित्व में रहता है जबकि साम्यवादी व्यवस्था में मीडिया सरकारी स्वामित्व में रहता है।
- प्रभुत्ववादी नियंत्रण नकारात्मक होता है जबकि साम्यवादी नियंत्रण सकारात्मक।
- प्रभुत्वादी सिद्धांत सत्ता की कोई आलोचना बर्दाश्त नहीं करता जबकि साम्यवादी व्यवस्था कुछ सीमाओं के अंतर्गत या सीमित तौर पर ऐसी अनुमति देता है।
- प्रभुत्ववादी व्यवस्था में प्रेस को सत्ता से अलग माना जाता है जबकि साम्यवादी व्यवस्था में प्रेस को सरकार का अंग माना जाता है।
- प्रभुत्वादी व्यवस्था में सत्ता यह निश्चित करती है कि प्रेस क्या नहीं करें जबकि साम्यवादी व्यवस्था में सरकार तय करती है कि प्रेस क्या करें।

साम्यवादी प्रेस व्यवस्था में विचारों के विरोध का काई स्थान नहीं है। इस व्यवस्था में मीडिया का लक्ष्य न तो मनोरंजन करना है और न ही सूचना का प्रसार। इसका लक्ष्य मुख्यतः साम्यवादी व्यवस्था के अनुरूप समाज को नियंत्रिता करना है। इस प्रकार संचार माध्यम पर सरकार का नियंत्रण होता है।

.....